अमृत प्रार्थना भगवान से
(सूरदासजी का पद अनुसार)

परम पूज्य गुरुदेव द्वारा कराई प्रार्थना
भगवद भक्त सूरदास जी का एक पद है ।
उसी के अनुसार आज हम सभी प्रार्थना करेंगे ।

हे प्रभु! हे दीन बंधु! हे दया नाथ! मैं आपको कैसे प्रसन्न करूँ?
यदि मैं आप पर जल चढ़ाता हूँ...तो साक्षात गंगा जी आपके चरणों से निकली हैं !
यदि मैं आपको फल-फूल-मिठाई चढ़ाता हूँ... तो साक्षात कामधेनु गौ माता साक्षात कल्प वृक्ष,ये आपके द्वारा ही प्रकट किए गए हैं। ये संपूर्ण पदार्थों को प्रकट कर सकते हैं !
तो मैं आपको किस वस्तु से प्रसन्न करूँ?
यदि मैं धूप-दीप-आरती दिखाता हूँ... तो यह सूर्य-चंद्रमा-तारे यह सब आपके चरणों की शोभा हैं! चरणों को प्रकाशित करते हैं!
यदि मैं गीता-रामायण या अन्य कोई पाठ करता हूँ ...आपको प्रसन्न करने के लिए,तो वेद तो आपकी स्वाँस से प्रकट हुई है। मैं आपको कैसे प्रसन्न करूँ?
यदि मैं धन-लक्ष्मी-ऐश्वर्य चढ़ाता हूँ...तो साक्षात लक्ष्मी देवी आपके चरणों की सेवा करती है!
*इसलिए मुझे समझ नहीं आ रहा है कि मैं आपको कैसे प्रसन्न करूँ?
लेकिन मैंने गीता जी में सुना है कि...यदि कोई प्रेम से,भाव से पत्र-पुष्प-जल-फल आदि अर्पण करता है...तो आप इतने मात्र से ही प्रसन्न हो जाते हैं।
यदि ऐसा है तो मैं अपने आप को ही आपके चरणों में समर्पित करता हूँ।
मेरी शरणागति को स्वीकार करें! स्वीकार करें! स्वीकार करें!